संस्कृतम्

(द्वादशकक्षायाः पाठ्यपुस्तकम्)

माध्यमिकशिक्षापरिषद्, उत्तरप्रदेशः
प्रयागराजः

Royalty Paid Book

प्रथम संस्करण : 2023-24
द्वितीय संस्करण : 2025-26

© माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज–211001

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक किसी अन्य प्रकार से व्यापार, पुनर्विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य ₹ 17.00

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में 80 जी.एस.एम. मैपलीथो पेपर IS मार्क नवीनत्म संशोधित BIS Specification 1848/2007 Updated Revised पेपर (सेतिया पेपर मिल्स लि., के. आर. पल्प एण्ड पेपर्स लिमिटेड, बिन्दल पेपर मिल्स लि., मोहित पेपर मिल्स लि., ट्राइडेन्ट लि.) के मानक का प्रयुक्त किया गया है।

मुद्रक एवं वितरक :

राजीव प्रकाशन

48/13A रामबाग, प्रयागराज

दूरभाष : 2402474, 2404980

पुरोवाक्

अतिहर्षावहो विषयोऽयं यद् उत्तरप्रदेशस्थप्रयागराजस्य माध्यमिकशिक्षापरिषदा माध्यमिकोच्चतर माध्यमिक–कक्ष्याणां कृते पाठ्यपुस्तकानां नूतनं संस्करणं प्रस्तूयते।

शिक्षा स्वविस्तृतार्थे शिक्षणस्यासौ प्रक्रिया या आजीवनं निरन्तरं प्रवर्तते, परं तु औपचारिकी शिक्षा मनुष्यस्य ज्ञानं कौशलं च विवर्धय्य तं सुयोग्यं नागरिकं विदधाति। शिक्षायाः प्रक्रियैषा व्यक्तेराचरणं व्यवहरणं बोधस्तरं भाषाबोधं चादधाति।

राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 अधुनातनवैश्विकपरिदृश्यानुरूपं ज्ञानेन सहैव कौशलस्य महत्त्वमादधाना विद्यालयीयशिक्षायामुच्चशिक्षायां च छात्रेभ्यः संस्कृतस्य तथा चान्यभारतीयभाषाणां विकल्पं प्रददाति। वर्तमाने प्रचलिताः सर्वाः भारतीयभाषाः आहोस्वित् संस्कृताद् विकसिताः उताहो तासु संस्कृतस्य व्यापकः प्रभावः। अथ च निखिलभारतीयभाषासाहित्येऽपि संस्कृतसाहित्यस्य अविनाशिप्रभावः। अतः संस्कृतभाषायाः तत्साहित्यस्य चाध्ययनं भाषाबोधसामर्थ्यं विवर्धयत् स्वाभिज्ञानमूलानि प्राचीनां श्रेष्ठसंस्कृतिं ज्ञानं विज्ञानं दर्शनं च प्रत्यभिज्ञापयत् गौरवस्यानुभूतिं राष्ट्रप्रेमजागरणं चानुतिष्ठति। संस्कृतं भारतीयानामैक्यबन्धावस्थापने दृढं सूत्रमस्ति। अपि च भाषेयं स्वव्याकरणेन शब्दसामर्थ्येन चाभिनवां प्रौद्योगिकीं व्यक्तीर्क्तुं पूर्णरूपेण शक्ता। अतः संस्कृतस्याध्ययनम् अत्यन्तमुपयोगाय कल्पते।

विद्यार्थिनां समग्रविकासमभिलक्ष्य एकादशद्वादशकक्ष्ययोः (कक्षा–11, 12) परीक्षासु सत्रार्धपाठ्यक्रमपरीक्षा–(सेमेस्टर) पद्धतिः बहुविकल्पीयप्रश्नानां योजनादीनि परिवर्धनानि कृतानि सन्ति। तदनुसारं विदुषां परामर्शदातृणाम् अनुभवसम्पन्नानां विषयविशेषज्ञानां विभागीयसदस्यानां च समवेतप्रयत्नेन सिद्धानि सज्जितानि संस्कृतानि च संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि शिक्षकाणामध्यापनाय सुखावहानि विद्यार्थिनां च सुखावबोधाय भवेयुः।

डॉ0 महेन्द्रदेवः
निदेशकः (मा0)/सभापतिः
माध्यमिकशिक्षापरिषद्
उत्तरप्रदेशः, लखनऊ

पाठ्यपुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन।

निर्देशक :

डॉ0 महेन्द्र देव, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

संयोजक :

श्री दिब्यकान्त शुक्ल, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

सह–संयोजक :

श्री अशोक कुमार गुप्ता, अपर सचिव (पा0पु0रा0), माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती मनीषा कुशवाहा, सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

परामर्शदातृमण्डल :

डॉ0 आनन्द कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, सी0एम0पी0पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज।

प्रो0 भगवत शरण शुक्ल, पूर्व आचार्य, व्याकरण–विभाग, प्रा0वि0ध0वि0 सङ्काय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी।

डॉ0 उर्मिला श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज, प्रयागराज।

प्रो0 मनोज कुमार मिश्र, अध्यक्ष, वेद–विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीरणवीर परिसर, जम्मू।

विषय–विशेषज्ञ :

डॉ0 शम्भुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल', पूर्व प्राचार्य, त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, दारागंज, प्रयागराज।

डॉ0 वाचस्पति मिश्र, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़।

डॉ0 यीश नारायण द्विवेदी, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, सदानन्द डिग्री कॉलेज, फतेहपुर।

डॉ0 कमलेश कुमार, प्रवक्ता, गोपाल विद्यालय इण्टर कॉलेज, कोरांव, प्रयागराज।

डॉ0 प्रीति मिश्रा, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।

डॉ0 र×जना यादव, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।

डॉ0 शत्रुधन प्रसाद मिश्र, प्रवक्ता, जवाहरलाल नेहरू स्मा0 इ0 कॉ0, जारी, प्रयागराज।

डॉ0 संदीप कुमार मिश्र, प्रवक्ता, राष्ट्रीय इण्टर कॉलेज, सुजानगंज, जौनपुर।

समन्वयकः

सुधा चौरसिया, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

बबली पासी, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

चित्राङ्कनः

आशीष नारायन।

●

भूमिका

'संस्कृतेनैव संस्कृतिः' को सहर्ष स्वीकार किया जाता है। ऋषियों द्वारा प्रणीत आकरग्रन्थ ही हमारी भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। इन ग्रन्थों में मानवीय जीवन–दर्शन, मानव–मूल्यों एवं संस्कारों की अनुपम शिक्षा निबद्ध है। अतएव संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की प्राणभूता अमूल्य निधि है। वैदिक एवं लौकिक स्वरूप में व्याप्त संस्कृत–वाङ्मय हमारी ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक व साहित्यिक सम्पदा के रूप में लोक–जीवन के पोषण व विकास में सतत उपयोगी है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा संस्कृत विषय के रूप में कक्षा–12 के विद्यार्थियों के लिए रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवम् उपयोगी सामग्री सुलभ कराने के क्रम में संस्कृत–साहित्य की प्रमुख तीनों विधाओं से परिचित कराने हेतु चर्चित व लोकप्रिय ग्रन्थों में बाणभट्ट की **'कादम्बरी'**, महाकवि कालिदास विरचित **'रघुवंशमहाकाव्यम्'** एवम् **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'** का चयन कर इनके कुछ अंश पाठ्य–सामग्री के रूप में संकलित कर एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है।

'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्' की उक्ति को मान्यता देते हुए महाकवि बाणभट्ट की कादम्बरी के रोचक सन्दर्भ को 'चन्द्रापीडकथा' के नाम से अभिहित कर पाठ्यग्रन्थ के रूप में निर्धारित किया गया है। यह गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ मान्य रचना है जिसका सरल एवं सुबोध स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। संस्कृत–साहित्य में 'उपमा कालिदासस्य' यह कथन कालिदास की रचनाओं की सम्प्रतिष्ठा व विशेषता का द्योतक है। इस भाव से प्रेरित होकर कालिदास द्वारा विरचित 'रघुवंशमहाकाव्यम्' के अति रोचक व प्रेरक द्वितीय सर्ग के कतिपय श्लोकों का संकलन इस पाठ्य–पुस्तक में हुआ है जिनमें सूक्तियों व उपमाओं का विन्यास अत्यन्त हृदयाह्लादक, चमत्कारी व मनोहारी प्रतीत होता है।

'तत्र रम्या शकुन्तला' एवं 'शाकुन्तले चतुर्थोऽङ्कः' द्वारा परिनिष्ठित महाकवि कालिदास की अमर कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का उत्तरार्द्धांश इस पाठ्य–ग्रन्थ में संकलित है जिसे अत्यन्त सरल–सुबोध रूप में प्रस्तुत करने का यावच्छक्य प्रयास किया गया है।

संस्कृत–व्याकरण एवं रचना भाग के रूप में निबन्ध, अलंकार, अनुवाद, कारक एवं विभक्ति, समास, सन्धि, शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्यय, वाच्य परिवर्तन आदि जैसे विविध पक्षों पर विधिवत् प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है, जिससे छात्र अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकें।

प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक में विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा हेतु मूल पाठ के साथ प्रत्येक रचनाकारों का संक्षिप्त जीवन–परिचय, शैली, कथावस्तु व सारांश तथा पात्रों का चरित्र–चित्रण भी दिया गया है। श्लोकों के साथ अन्वय, शब्दार्थ, अनुवाद, व्याख्या सहित सामग्री, आधारित प्रश्न, गद्य भाग में व्याकरणात्मक टिप्पणी, शब्दार्थ, अनुवाद एवं आाधारित प्रश्नों का समावेश विद्यार्थियों के अवबोध की दृष्टि से किया गया है। सम्पूर्ण कृतियों से सन्दर्भित सूक्तियों को प्राथमिकता दी गई है। इसी क्रम में बहुविकल्पीय प्रश्नों का सन्निधान कर पुस्तक को नवीन प्रणाली से भी संयोजित किया गया है।

निष्कर्षतः इस पाठ्य–पुस्तक का समग्र संकलन इस आशय के साथ किया गया है कि विद्यार्थियों में संस्कृत विषय के अध्ययन हेतु अभिरुचि उत्पन्न हो सके तथा वे अपने दैनन्दिन आचार–व्यवहार में इसके उपयोग के माध्यम से संस्कारित व आदर्श नागरिक बनने में समर्थ हो सकें।

हम पूर्ण विश्वास के साथ आश्वस्त हैं कि यह पाठ्य–पुस्तक विद्यार्थियों के ज्ञानवर्द्धन, राष्ट्रप्रेम व बौद्धिक विकास हेतु उपादेय सिद्ध होगी।

■

अनुक्रमणिका

- ❑ पुरोवाक् iii
- ❑ भूमिका v

खण्ड 'क' (गद्य)–चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्धभागः)

- ❑ महाकवि बाणभट्ट : जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व 3-4
- ❑ बाणभट्ट की गद्यशैली 4-5
- ❑ चन्द्रापीडकथा : कथासार 6-8
- ❑ पात्रों का चरित्र–चित्रण 8-15
- ❑ चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्धभागः) 16-103
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 103-106

खण्ड 'ख' (पद्य) – रघुवंशम् (द्वितीयः सर्गः)

- ❑ कालिदास का जीवन–परिचय 109-112
- ❑ कालिदास का कर्तृत्व 112-114
- ❑ कालिदास की काव्य–शैली 115-118
- ❑ उपमा कालिदासस्य 118-121
- ❑ रघुवंश–महाकाव्य : संक्षिप्त परिचय 122-124
- ❑ रघुवंश–महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश 124-125
- ❑ रघुवंशम् (द्वितीयः सर्गः)– ४१ तः ७५ श्लोकपर्यन्तम् 126-152
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 153-154

खण्ड 'ग' (नाटक)–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

- ❑ कालिदास की नाट्यकला 157-160
- ❑ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का सारांश 160-160
- ❑ पात्रों का चरित्र–चित्रण 161-167
- ❑ अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्क)–११ श्लोकतः अङ्कसमाप्तिपर्यन्तम् 168-181
- ❑ सूक्ति–व्याख्या 181-183
- ❑ बहुविकल्पीय प्रश्न 183-184

खण्ड 'घ'

❑ संस्कृतनिबन्ध 187-194

खण्ड 'ङ'

❑ अलङ्कार (उपमा तथा रूपक) 195-197

खण्ड 'च' (व्याकरण)

1. अनुवाद 198-217
2. कारक तथा विभक्ति 218-226
3. समास 227-233
4. सन्धि (व्यञ्जन एवं विसर्ग) 234-239
5. शब्दरूप 240-252
6. धातुरूप 253-276
7. प्रत्यय 277-282
8. वाच्य–परिवर्तन 283-288

■